बच्चों से मैंने यह सब सीखा

तरन्नुम निशा

यह अनुभव छोटे बच्चों के साथ काम करने का है। इन बच्चों की उम्र 3 से 6 वर्ष है। बच्चों के साथ काम करने के लिए लेखिका ने गिजुभाई, *तोत्तोचान* को ज़ेहन में रखा, और उनकी उम्र को देखते हुए अलग-अलग पुस्तकों और यूट्यूब से कुछ खेलों का चयन किया।

पहले से निर्धारित दिन आँगनवाड़ी केन्द्र पहुँची तो देखा कि केन्द्र अस्त-व्यस्त था, और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री अपना कार्य कर रही थीं। बच्चे चटाई पर बैठे खिलौनों से खेल रहे थे। सहायिका वहीं एक कोने में बैठी बच्चों की निगरानी कर रही थीं कि कहीं कोई बच्चा बिना बताए घर न चला जाए। मुझे देखते ही कार्यकर्त्री ने मेरे लिए एक कुर्सी दी, पर मैंने बच्चों के साथ चटाई पर बैठना सही समझा, और उनके बीच बैठ गई।

कार्यकर्त्री ने अपनी कक्षा प्रक्रिया शुरू की। पहले सभी बच्चों को पंक्तियों में बैठाया, फिर एक-एक करके उनसे उनका नाम पूछा। कुछ जवाब दे रहे थे, कुछ चुपचाप बैठे थे। मैंने बच्चों से बात करनी चाही, पर किसी ने मेरी बात का जवाब ही नहीं दिया। जो बच्चे बोल रहे थे, पूछने पर वे भी चुप रहे। तब मैं चुपचाप उनके द्वारा किए गए काम को देखने लगी।

कार्यकर्त्री का बात करने का तरीक़ा प्रेमपूर्ण था। उनकी बातों से लगा कि वे बच्चों को अच्छी तरह जानती हैं। वे बातचीत में उनके घर-परिवार की बातें भी जोड़ रही थीं। बच्चे उनकी बातों के जवाब दे रहे थे। यह देखकर एक बात समझ आई कि बच्चों से बातचीत कैसे शुरू की जा सकती है। कार्यकर्त्री ने बच्चों के साथ अक्षर और गिनती बुलवाने की प्रक्रिया की। पहले वह बोलतीं, उनके पीछे-पीछे बच्चे बोल रहे थे। थोड़ी देर बाद बच्चों के खाने का समय हो गया और उन सभी को खाना खिलाया गया। खाने से पहले हाथ धुलवाए, पंक्तियों में बैठाया और प्रार्थना करवाई गई। इस सबके बाद कुछ बच्चे खिलौनों से खेलने लगे, और कुछ घर जाने के लिए कहने लगे।

चित्र 1: स्नेह से बात करना बच्चों को सीखने के लिए तैयार करता है

> **जब मैंने बच्चों के साथ काम किया, समझ आया कि बच्चों के सीखने की गति तेज़ होती है जब वे रुचि लेकर किसी बात को सुनते या गतिविधि करते हैं, उसके सन्दर्भ को समझते हैं और अपनी बात सन्दर्भ से जोड़कर कहते हैं।**

कार्यकर्त्री अभी भी व्यस्त थीं। मैं उनसे कक्षा प्रक्रिया के बारे में बातचीत करना चाहती थी। मेरे पूछने पर वे कुछ समय देने के लिए तैयार हो गईं। उन्होंने बताया कि बच्चों को घर से बुलाना पड़ता है, और ज़्यादातर बच्चों ने अभी-अभी ही आना शुरू किया है। साथ ही, प्रत्येक दिन वह अलग-अलग विषय की जानकारी देती हैं। उनकी बातें सुनकर समझ आया कि बच्चों की आयु व डोमेन के अनुसार गतिविधियों का अभाव है, और कार्यकर्त्री की शाला-पूर्व या अनौपचारिक शिक्षा की समझ बहुत ज़्यादा नहीं बनी है। इस बातचीत के दौरान ही मैंने कार्यकर्त्री के साथ अगले दिन की कार्ययोजना साझा की। आँगनवाड़ी से निकलते हुए मन में बहुत सारे विचारों की लहरें उठ रही थीं। जैसा सोचा था वैसा कुछ हुआ नहीं। बच्चों ने न मुझसे बातें कीं न मेरी कोई भी बात सुनी। किताबें पढ़ते समय यह काम करना काफ़ी आसान लग रहा था, लेकिन आँगनवाड़ी जाने के बाद असल समस्या समझ आ रही थी।

दूसरे दिन केन्द्र पहुँची, और सबसे पहले कक्षा के स्वरूप में कुछ बदलाव किया। सभी बच्चों के लिए पर्याप्त फ़र्श बिछवाया, और कार्यकर्त्री की टेबल-कुर्सी को अन्य कक्ष में स्थानान्तरित किया ताकि बच्चों के साथ गतिविधि के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके। मैं बच्चों के साथ बैठी, और उनसे बातचीत करना शुरू किया। 3 वर्ष की सौम्या थोड़ी बातूनी लगी, इसलिए सबसे पहले उसी से बात शुरू की।

मैंने पूछा, "आपका नाम क्या है?"

चित्र 2 : कार्ड वाली गतिविधि और बच्चों का जुड़ाव

चित्र 3 : भाव व अभिनय के साथ कविता का आनन्द लेते बच्चे

उसने कहा, "मेरा नाम सौम्या है।" और तुरन्त मुझसे पूछा, "तुम क्यों पूछ रही हो?" मैंने जवाब दिया, "मैं आप सभी के साथ खेलने आई हूँ इसलिए।"

दूसरे बच्चे भी अपने नाम बताने लगे। जो झिझक रहे थे उन्हें कार्यकर्त्री ने प्रोत्साहित किया। उन्होंने भी अपने नाम बताए।

बच्चों से सामान्य बातचीत हुई। जैसे—उन्हें कौन-से खेल पसन्द हैं; उनके घर में कौन-कौन हैं; वे कौन-से जानवर के बारे में जानते हैं; आदि। बातचीत करते-करते उन्हें ऑटो, साइकिल, बस जैसे कुछ वाहनों के चित्र दिखाए। सभी बच्चे चित्र देखकर उनके नाम बता पा रहे थे। इसी क्रम में, अपनी योजना अनुसार गतिविधि करवाती गई। देखा कि सभी उन गतिविधियों में शामिल हो रहे थे। मैं प्रतिदिन जाती और बच्चों के साथ कार्यकर्त्री की मार्गदर्शिका में सुझाई गई गतिविधि करवाती। 15 दिन की गतिविधि के बाद बच्चों ने मेरे गतिविधि और बातचीत करवाने के तरीक़े को समझ लिया। सभी बच्चे नियमित केन्द्र में भी आने लगे।

बच्चों का सीखना

अकसर हम सोचते हैं कि छोटे बच्चे बातों को जल्दी भूल जाते हैं, या ध्यान नहीं देते। लेकिन जब मैंने उनके साथ काम किया, समझ आया कि बच्चों के सीखने की गति तेज़ होती है वो जब रुचि लेकर किसी बात को सुनते या गतिविधि करते हैं, उसके सन्दर्भ को समझते हैं और अपनी बात सन्दर्भ से जोड़कर कहते हैं। बच्चों के साथ हुए कुछ अनुभव यहाँ प्रस्तुत हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया के बारे में कई बिन्दुओं को रेखांकित करते हैं।

पहला अनुभव

मैं बच्चों के साथ 'वाहन' थीम पर बात कर रही थी। उन्हें विभिन्न वाहनों के चित्र दिखाते हुए पूछा कि कौन-सा वाहन कहाँ चलता है? साइकिल देखकर बच्चे बोले कि यह सड़क पर चलती है। बस भी सड़क पर चलती है। हवाईजहाज़ आसमान में उड़ता है। नाव दिखाने पर वे थोड़ा सोचने लगे। मैंने उन्हें हिंट दिया कि तालाब में क्या-क्या चलता है। चूँकि केन्द्र से थोड़ी दूरी पर तालाब है, और वहाँ से सभी का आने-जाने का रास्ता है, इसलिए मुझे पूरी उम्मीद थी कि बच्चे सही जवाब देंगे। लेकिन उनके जवाब सुनकर मैं हैरान थी। केन्द्र में लगभग 15 बच्चे थे। वे सभी बोले कि तालाब में जेसीबी चलती है, ट्रैक्टर चलता है। सौम्या ने बड़े ही आत्मविश्वास से कहा कि कोई-कोई लोग अपनी गाड़ी भी तालाब में चलाते हैं। बच्चे अपने अनुभव के साथ अपनी बातें रख रहे थे। चूँकि तालाब में साफ़-सफ़ाई का काम लम्बे समय से चल रहा था तो उन्होंने कभी उसमें नाव चलते नहीं देखी थी। अतः उन्होंने जो देखा, वही बताया।

इस थीम पर काम करते हुए वाहन के अलग-अलग आकार के कट आउट जमाने वाली गतिविधि करवाई। सभी बच्चों को एक-एक आयताकार टुकड़ा, कुछ गोलाकार टुकड़े, और कुछ तिकोने टुकड़े दिए। अपेक्षा यह थी कि सभी अपने-अपने हिसाब से आकृतियाँ बनाएँगे। उन्होंने अपने अनुसार कट आउट जमाने का प्रयास किया, पर दो बच्चों ने अपने कट आउट को मिलाकर एक बड़ी आकृति बनाई। उस आकृति की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने तारीफ़ की, और थोड़ी देर बाद सभी बच्चों ने अपने कट आउट एक साथ जमाकर रेलगाड़ी बना दी।

दूसरा अनुभव

पानी के जहाज़ का चित्र दिखाने पर सभी बच्चे बोले कि यह जहाज़ है। मैं फिर हैरान हुई कि बच्चों ने यह नहीं देखा होगा फिर तुरन्त कैसे पहचाना। मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाया और पूछा कि तुमने इसे चलते हुए देखा है। बच्चे भाव-भंगिमाओं के साथ पानी में जहाज़ का चलना बताने लगे। उनके वाक्यों में लहर, समुद्र जैसे शब्द आ रहे थे। सभी अपने-अपने तरीक़े से जहाज़ के बारे में बता रहे थे। जब जानना चाहा कि उन्होंने

जहाज़ कहाँ देखा, वे बोले टीवी पर। बच्चों ने पानी के जहाज़ को तो तुरन्त ही पहचाना, लेकिन तालाब में चलने वाली नाव को बताने में वे असमर्थ थे। हालाँकि दोनों ही स्थितियों में वे सीधेतौर पर अपने अनुभव का इस्तेमाल कर रहे थे। समझ आया कि तीन वर्ष के बच्चे भी चीज़ों को ध्यान से देखते हैं, बातों को सन्दर्भ से जोड़ते हैं, और यहीं से सीखने की शुरुआत होती है। इसीलिए शायद एक सवाल के बहुत सारे जवाब आने लगते हैं।

तीसरा अनुभव

बच्चे अपने आस-पास के माहौल के बारे में सोचते और बोलते थे। कई बार कल्पना भी करते। मसलन, एक बच्चे ने कहानी सुनाई–

"जंगल में भूत रहता है। एक दिन मेरे घर आया। मुझसे मेरी गाड़ी माँग रहा था। वो उड़कर मेरी छत पर आया। मैंने उसे डण्डे से मारकर भगाया।"

मैंने उससे पूछा, "तुमने भूत कहाँ देखा है? उसने कहा, "मेरी दादी बताती हैं कि भूत बहुत बड़ा होता है।"

अब भूत पर चर्चा शुरू हुई। वह कैसा होता है; क्या खाता है; उसके घर में कौन-कौन रहता है; आदि। सभी बच्चों को इस बातचीत में मज़ा आ रहा था। वे पूछे गए सवालों का जवाब दे रहे थे।

चौथा अनुभव

सिया ने केन्द्र में आना शुरू किया। उसकी मम्मी उसको ज़बरन कमरे में छोड़कर चली जातीं। वो थोड़ी देर रोती रहती, फिर चुपचाप एक कोने में बैठ जाती। यह सिलसिला तीन-चार दिन चला। इस बीच आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री और मैं उससे कुछ-न-कुछ बात करने की कोशिश करते, पर वह कोई जवाब नहीं देती। हमने कोशिशें जारी रखीं। पाँचवें दिन वह आई तो आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री किसी काम में व्यस्त होने की वजह से उससे बात नहीं कर पाईं। तब वह ख़ुद उनके पास जाकर बताने लगी, "आज मैं समोसा खाकर आई हूँ। रात में पापा ने मम्मी को मारा था, मैं रोने लगी।" कार्यकर्त्री ने उससे प्यार से बात करते हुए उसका ध्यान दूसरी बातों की तरफ़ किया। बच्चों का आप पर विश्वास होना बहुत ज़रूरी है। मुझे समझ आया कि कार्यकर्त्री का उससे प्यार से बात करना और उसके जवाब न देने पर भी उसको बिना डाँटे मुस्कुराते हुए उससे बातें करते रहना उसके मन में एक विश्वास पैदा कर गया। इस वजह से अब वो ख़ुद अपनी बातें कहती है। अब वह सभी गतिविधियों में भाग लेती है, यहाँ तक कि वो अपने घर भी जाना नहीं चाहती। यहाँ कार्यकर्त्री का धैर्य बहुत महत्त्वपूर्ण था। जिस धैर्य के साथ उन्होंने सिया को कक्षा से जोड़ा, वह बहुत ज़रूरी है।

पाँचवाँ अनुभव

जब मैंने केन्द्र में जाना शुरू ही किया था, तब देखा कि सभी बच्चे अपना-अपना खेल खेलते रहते थे। धीरे-धीरे मैं बच्चों के साथ खेल में शामिल हुई, और उन्हें समूह में खेल खेलने के अवसर दिए। पहले बच्चे एक दूसरे को खेलने का मौक़ा नहीं देते थे। कोई भी खिलौना, जैसे–गेंद, रस्सी, मुखौटे, अपने पास ही रख लेते थे। उनसे वापस लेने पर वे रोने लगते थे। 'बाल्टी में गेंद डालो' जैसी गतिविधियाँ करवाने पर अगर गेंद बाल्टी में न जाए तो रोने लगते या गेंद लेकर भाग जाते थे।

मुश्किल लगता था कि कोई खेल एक साथ कैसे खेला जाए! पर जब प्रतिदिन बच्चों के साथ एक सामूहिक खेल खेला तो धीरे-धीरे उन्हें समूह में खेल खेलने के नियम समझ आने लगे। वे अपनी बारी का इन्तज़ार करने लगे। अगर कोई अपनी बारी पर नहीं आता या पहले आ जाता तो दूसरे बच्चे उसे बता देते। जिन बच्चों को खेलने में कठिनाई होती थी, दूसरे बच्चे उसे खेल में मदद करते। मसलन, यदि 3 वर्ष के बच्चों को पहिए लुढ़काने में कठिनाई हुई तो 5-6 वर्ष के बच्चों ने उनकी गतिविधि में मदद कर दी। गतिविधि पूरी न होने पर उसे बार-बार दोहराते हैं। अगर कभी कार्यकर्त्री बच्चों को सामूहिक खेल नहीं खिलवातीं तो वे स्वयं ही कार्यकर्त्री से कह देते हैं कि दीदी फ़लाँ खेल खिलवाएँ।

अन्त में

हमारे लिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि यदि बच्चों से प्रेम से बातचीत की जाए तो वे कही गई हर बात सुनते और समझते हैं। सीखने की शुरुआत बातचीत से बेहतर होती है। बातचीत भी ऐसी जो उनके परिवार, परिवेश से जुड़ती हो, और जिसका जवाब देने में उनको आसानी हो।

मैंने 24 दिन बच्चों के साथ लगातार काम किया। इस दौरान यह समझने में मदद मिली कि वे सीखते कैसे हैं। और जब वे कुछ नया सीखते हैं, उनकी जिज्ञासा और ज़्यादा बढ़ती है। वे कल्पना करते हैं। उनको बोलने की स्वतंत्रता दी जाए तो वे अपनी कल्पना को व्यक्त भी करते हैं। बच्चों के साथ उनकी उम्र के अनुसार गतिविधियाँ करवानी ज़रूरी हैं। पर्याप्त मौक़े और प्रेमपूर्ण व्यवहार उनका सीखना सुनिश्चित करते हैं। हर बच्चा अपनी क्षमता और स्तर के अनुसार सीखता है। वह अपनी कल्पना की दुनिया गढ़ता है, और दुनिया को विस्तार में देखना शुरू करता है।

तरन्नुम निशा वर्ष 2015 से शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य से जुड़ी हैं। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षा (विज्ञान विषय) में बच्चों के साथ काम करने का अनुभव है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, सागर, मध्य प्रदेश में काम कर रही हैं।

सम्पर्क : tarannum.nisha@azimpremjifoundation.org